



# INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 333-337

Received: 12-04-2025  
Accepted: 21-06-2025  
Published: 26-07-2025

## प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण

<sup>1</sup>KM Taruna Devi and <sup>2</sup>Dr. Arvind Kumar

<sup>1</sup>Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

<sup>2</sup>Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20109667>

Corresponding Author: KM Taruna Devi

### सारांश

यह शोधपत्र इस बात का अध्ययन करने का प्रयास करता है कि हिंदी और उर्दू में उपन्यासों और लघु कथाओं के लेखक प्रेमचंद ने भारतीय विषयों को पश्चिमी साहित्यिक शैलियों में ढालने में किस तरह अग्रणी भूमिका निभाई। प्रेमचंद (1880-1936) ने उन चीजों के बारे में लिखा जो हमेशा से मौजूद थीं, इन समस्याओं का समावेश उनके उपन्यासों को एक सार्वभौमिक अपील प्रदान करता है। गोदान दुख की कहानी नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण भारत का यथार्थवादी चित्रण भी है। उपन्यासकार संस्कृतनिष्ठ ब्राह्मणवादी धर्म की निंदा करता है। गोदान का मुख्य उद्देश्य मनुष्य में मानवीय दृष्टिकोण को जागृत करना है, ताकि समाज समाजवाद और सुखी विश्व के मार्ग पर चलना सीखे। उपन्यास कला और समाज, मनुष्य और उसके युग का संश्लेषण प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार ने धर्म, जाति, सामाजिक व्यवस्था और समुदाय पर अपने विचार यथार्थवादी ढंग से व्यक्त किए हैं। लेखक ने गबन में मुद्दों को उजागर किया है।

**मूलशब्द:** गोदान, प्रेमचंद, मानवीय दृष्टिकोण, उपन्यासकार, सामाजिक, भारतीय

### प्रस्तावना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं। उनसे पहले उपन्यास रोमांटिक विधा थी और यह व्यक्तिगत रुचियों और जरूरतों को पूरा करती थी। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास में यथार्थवाद का तत्व पेश किया। वे व्यक्तिवादी लेखन विधा के विरोधी हैं और ऐसे साहित्य के पक्षधर हैं जो व्यक्तियों में रचनात्मकता की भावना का संचार करने में सक्षम हो। वे जीवन के प्रति मानवीय दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं। उनके लिए साहित्य तभी पूर्ण और सार्थक है जब वह व्यक्ति को व्यक्तिगत जटिलताओं और विश्वासों से मुक्त करने में सक्षम हो। यह व्यक्ति को एक विशिष्ट संवेदनशीलता विकसित करने में सक्षम बनाता है जो रचनात्मक आवेग के साथ सामान्य को सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम है। गीतांजलि पांडे ने अपनी पुस्तक बिटवीन टू वर्ल्ड्स में साहित्य पर प्रेमचंद के विचारों को व्यक्त किया है:

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास निर्मला (1927) में देहेज प्रथा और अनमेल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को उजागर किया है, जिसमें हमेशा युवा महिलाएं ही शिकार बनती हैं। दरअसल, यह

उपन्यास निर्मला नाम की एक युवती की करुण कहानी है, जिसका विवाह एक वृद्ध विधुर से होता है, जिसके कई बच्चे हैं। अपने पति पर बेवफाई का शक होने के कारण उसे काफी मानसिक यातनाएं सहनी पड़ती हैं। उपन्यास की कहानी तीन परिवारों के इर्द-गिर्द घूमती है। निर्मला नाम की केंद्रीय पात्र इन परिवारों के बीच की कड़ी है। उपन्यास रंगभूमि (1925) ग्रामीण गरीबी, जातिगत भेदभाव, छुआछूत और स्वतंत्रता समर्थक भारत की पृष्ठभूमि में अमीर और गरीब के बीच तनाव जैसे सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाता है। औद्योगीकरण की प्रतिक्रिया काफी स्पष्ट है।

उद्योगपति को अपने व्यापारिक हितों के प्रति अत्यधिक जुनूनी और जुनूनी दिखाया गया है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वह बिना किसी शर्म के अपनी वफादारी बदल देगा। उद्योगपति प्रभु सेवक ने स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि अगर व्यापार 'नरभक्षी' न हो तो वह कुछ भी नहीं है। मनुष्यों को जानवर के रूप में देखना और उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करना व्यापार जगत का आदर्श वाक्य है। जब तक कोई अपने साथी मनुष्यों के

प्रति क्रूर नहीं होता, तब तक कोई व्यवसायी बनने में सफल नहीं हो सकता। इस प्रकार, उपन्यासकार भारतीय गांवों में सदियों पुरानी सामाजिक परंपराओं और नए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लहर के बीच संघर्ष को चित्रित करता है।

प्रेमचंद का सर्वप्रथम उपन्यास कर्मभूमि (1932) जो राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि में लिखा गया था, अपने समकालीन काल की अनेक सामाजिक बुराइयों को सामने लाता है, जैसे नशाखोरी और अशिक्षा के कारण अछूतों के मंदिरों में प्रवेश पर प्रतिबन्ध, भूमि विवाद, जमींदारों का अत्याचार तथा गांधीजी के नेतृत्व में युवाओं में उभरती राष्ट्रवादी ताकतें।

प्रेमचंद किसानों के 'बारदोली आंदोलन', वर्धा में अछूतों के लिए लक्ष्मीनारायण मंदिर के द्वार खोलने और गांधी इरविन समझौते आदि से बहुत प्रभावित थे। उपन्यास भारतीय चिंतन के मूल दर्शन को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है और इसके महत्वपूर्ण शीर्षक के कई अवलोकनों को उजागर करता है। कर्म शब्द ही एक तरह से मानव जीवन में कर्तव्य, कार्य और काम के महत्व को दर्शाता है। दूसरे शब्द 'भूमि' का अर्थ है धरती, जमीन और मैदान। इसलिए, उपन्यास को 'कार्य का क्षेत्र' माना जा सकता है और उपन्यास का मुख्य विषय सामाजिक बुराइयों को उजागर करना है। उपन्यास की शुरुआत में ही प्रेमचंद शैक्षणिक संस्थानों में हो रहे अत्याचारों को उजागर करते हैं।

### साहित्य की समीक्षा

के., जयलक्ष्मी. (2016) [1]. हिंदी में आधुनिक काल का आगमन 1900 के दशक से माना जाता है। आरंभ में आधुनिक हिंदी साहित्य जादुई और परीकथाओं पर केंद्रित था, जो पाठकों को कल्पना से मनोरंजन करता था। धनपत राय श्रीवास्तव के रूप में जन्मे, उन्होंने "नवाब राय" उपनाम से एक स्वतंत्र लेखक के रूप में अपना करियर शुरू किया, लेकिन जब उनकी कृति 'सोज-ए-वतन', लघु कथाओं का संग्रह ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया और जला दिया गया, इसके बाद उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया, जिसका नाम था 'मुशी प्रेमचंद'। प्रेमचंद को आमतौर पर 'भारत का टॉलस्टॉय' कहा जाता है, जिन्होंने हिंदी साहित्य को वास्तविकता में आकार दिया। उन्होंने उपन्यासकार, कहानीकार और नाटककार के रूप में साहित्यिक विधा पर विजय प्राप्त की, और हिंदी आधुनिक साहित्य में 'उपन्यास सम्राट' (उपन्यास सम्राट) की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने पाठकों के सामने समाज की वास्तविकता को चित्रित करके हिंदी साहित्य जगत को एक नया आयाम दिया। उन्होंने वर्ष 1917 में अपने उपन्यास 'सेवासदन' के साथ हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया। उन्होंने 17 उपन्यास और 300 से ज़्यादा लघु कथाएँ लिखी हैं, जिनमें उनके समय के समाज में व्याप्त सामाजिक मुद्दों को दर्शाया गया है। उन्होंने सामंती व्यवस्था, ज़मींदारी व्यवस्था, गरीबी, सांप्रदायिकता, जाति व्यवस्था और समाज में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के खिलाफ़ आवाज़ उठाई। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का भी ज़िक्र किया। उन्होंने दहेज प्रथा, विधवा विवाह के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को अपने ऊपर होने वाले सामाजिक बुराइयों और भेदभाव के खिलाफ़ अपनी भावनाओं को सामने लाना चाहिए। उन्होंने अपने आस-पास के जीवन पर लिखा और पाठकों को उनके आस-पास की सामाजिक संरचना के बारे में जागरूक किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में आम आदमी को नायक और नायिका का दर्जा देते हुए उनके सामने आने वाली समस्याओं को दर्शाया।

पंत, डॉ. (2020) [2]. प्रेम चंद उर्फ धनपत राय श्रीवास्तव का जन्म 1880 में हुआ था। वे एक विपुल लेखक थे, जिन्होंने 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में भारत के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाने के लिए अपनी कलम का इस्तेमाल किया। वे हिंदी साहित्य में सबसे प्रमुख हस्तियों में से एक हैं और अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज के सार को पकड़ने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं। निर्मला, उनकी एक मौलिक रचना है, जो सामाजिक यथार्थवाद में उनकी महारत का एक उदाहरण है। प्रेम चंद एक प्रसिद्ध लेखक थे, जिनकी रचनाओं में भारतीय जीवन का यथार्थवादी और विशद चित्रण किया गया है। सामाजिक यथार्थवाद, गरीबी, अशिक्षा, दहेज, बेमेल विवाह, अस्वस्थ सामाजिक संबंध, बाल विवाह, खुशहाल परिवारों का पतन और महिलाओं के प्रति असमान व्यवहार उनके लेखन के प्रमुख विषय हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य उपन्यास निर्मला का गहराई से विश्लेषण करना है, जिसमें सामाजिक मुद्दों, मानवीय रिश्तों की पेचीदगियों और समकालीन भारत में इसकी स्थायी प्रासंगिकता का चित्रण किया गया है। कीवर्ड: पतन, सामाजिक यथार्थवाद, असमान व्यवहार।

सिल्या, चौधुरीमयुम। (2024) [3]. यह लेख मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक वास्तविकताओं की गहराई से पड़ताल करता है, जो दहेज, व्यक्तिगत बलिदान, विवाह और महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले सामाजिक भेदभाव, विशेष रूप से 20वीं सदी के आरंभिक भाग में विधवाओं के विषयों पर केंद्रित है। कथाएँ पात्रों - पूर्णा, कमला प्रसाद, धननाथ आदि के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती हैं और 20वीं सदी के आरंभिक ग्रामीण भारत की जटिल सामाजिक गतिशीलता का पता लगाती हैं। अमृतराय एक विधुर है जो अपने समय में हो रही सामाजिक बुराइयों को मिटाकर समाज को बदलना चाहता था। वह प्रेमा के लिए अपने प्यार का त्याग करता है और सामाजिक सुधार का कार्य अपने ऊपर ले लेता है। प्रेमा एक युवा सुंदर महिला है जो पारंपरिक समाज में एक आदर्श महिला के प्रतीक का प्रतीक है। वह अमृतराय की मंगेतर है। पूर्णा, एक विधवा, उपन्यास प्रतिज्ञा की नायिका है कमला प्रसाद एक नैतिक रूप से भ्रष्ट चरित्र और एक षडयंत्रकारी खलनायक है जो पूर्णा को बहकाने की कोशिश करता है।

कमर, परवीन और मैका, शिवम। (2021) [4]. भारत गंगा-यमुनी तहजीब का उद्गम स्थल रहा है। वो तहजीब जिसमें इंसानियत लोगों के दिलो-दिमाग पर हावी हो। हिंसा के लिए कोई जगह न हो और इंसानियत ही शांति का निर्माण करे। यहां सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान किया जाता है और विचारों को स्थान दिया जाता है। प्रेमचंद इसी तहजीब के अनमोल रत्न थे। उपन्यासकार और कहानीकार प्रेमचंद बीसवीं सदी के हिंदी और उर्दू के पहले बड़े उपन्यासकार माने जाते हैं। 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के एक गांव लमही में जन्मे प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे कायस्थ परिवार से ताल्लुक रखते थे जो उस समय, खासकर मुगल काल में बड़े पदों पर हुआ करते थे। उनके दादा गुरु सहाय खुद पटवारी थे और चाचा महाबीर बड़े जमींदार। उनके पिता अजायब लाल डाकघर में क्लर्क थे। लेकिन पूर्वजों की पहचान से परे प्रेमचंद ने अपनी अनूठी पहचान बनाई- एक ऐसे लेखक की पहचान जिसने अभिव्यक्ति के माध्यम के तौर पर हिंदी और उर्दू से ज्यादा हिंदुस्तानी भाषा को तरजीह दी। यह उनकी मिश्रित संस्कृति पर लेखन की असाधारण शैली ही थी जिसने उन्हें हिंदी उपन्यासों का सम्राट बना दिया।

सिंह, शैलेन्द्र. (2020) [12]. यह लेख 1920 और 1930 के दशक के सबसे बहुमुखी और लोकप्रिय उर्दू-हिंदी लेखकों में से एक प्रेमचंद की काल्पनिक रचनाओं में महिलाओं के सूक्ष्म और खुले विचारों की जांच करता है। उनके लेखन की एक विस्तृत श्रृंखला को देखते हुए, यह तर्क दिया गया है कि महिलाओं के प्रश्न के साथ प्रेमचंद के साहित्यिक जुड़ाव को 'रूढ़िवादी' या 'उदारवादी/कट्टरपंथी' जैसे द्विआधारी शब्दों के माध्यम से संक्षेप में नहीं समझा जा सकता है। जबकि कुछ कहानियों में घरेलू दायरे में गुणी और आज्ञाकारी महिला को एक आदर्श के रूप में महत्व दिया जाता है, राष्ट्रवादी तरीके से प्रेमचंद की कहानियाँ शहरी, शिक्षित और मध्यम वर्ग की हिंदू महिला के लिए आदर्शों के एक वैकल्पिक सेट को सामने लाती हैं। सूत्रबद्ध होने से बहुत दूर, प्रेमचंद के नारीत्व के चित्रण परिवर्तनशील, अस्थायी और विषयगत रूप से आकस्मिक प्रतीत होते हैं।

### मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास प्रतिज्ञा में सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब

मुंशी प्रेमचंद (1880 - 1936) को भारतीय साहित्य में प्रसिद्ध और प्रभावशाली लेखकों में से एक माना जाता है। मुंशी प्रेमचंद की अधिकांश रचनाएँ मध्यम वर्ग के समाज में होने वाले संघर्षों से संबंधित हैं और उन्होंने संघर्ष को हल करने के लिए समाधान लाने का प्रयास किया। उनका गहरा इरादा गरीब मध्यम वर्ग की भारतीय महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने का था, जिनका जीवन रूढ़िवादी मान्यताओं, पुरुष वर्चस्व और बाल विवाह, दहेज, यौन शोषण और अस्पृश्यता जैसी भयानक प्रथाओं के अधीन है। नतीजतन, उस समय की महिलाएँ तीव्र पीड़ा से पीड़ित थीं। प्रमलाला बत्रा के शब्दों में, स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

दहेज के अलावा भारतीय महिलाओं की पीड़ा का एक और कारण विधवाओं की असहाय स्थिति थी। विधवा को अपने पति की आय पर कोई अधिकार नहीं था। इसलिए संयुक्त परिवार में उसे प्रताड़ित किया जाता था। विधवाओं के माता-पिता भी उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। [बत्रा, प्रमिला। चार्ल्स डिकेंस और प्रेमचंद: सामाजिक उद्देश्य वाले उपन्यासकार:

### प्रतिज्ञा की कथा

प्रतिज्ञा (1927) अमृतराय नामक एक विधुर की कहानी है जो उस समय प्रचलित बुराइयों को दूर करके समाज को बदलना चाहता था। समाज को सुधारने का विचार उसके मन में तब आता है जब वह काशी के आर्य मंदिर में आयोजित एक प्रवचन में भाग लेता है। वह पंडित अमरनाथ के भाषण से प्रेरित होता है और वह एक विधवा से शादी करने का फैसला करता है ताकि वह युवा महिलाओं के जीवन को बचा सके। इसके अलावा, वह या तो अविवाहित रहने या केवल विधवा से शादी करने का वादा करता है। शुरुआत में, अमृतराय प्रेमा नामक एक सुंदर और गुणी लड़की से प्यार करता है जो उसकी मृत पत्नी की बहन है। वे एक-दूसरे से दिल से प्यार करते हैं और शादी समारोह के लिए सब कुछ तय हो गया था। हालाँकि, अमृतराय प्रेमा के लिए अपने प्यार को त्याग देता है और अपने जीवन का बलिदान देता है और एक समाज सुधारक के रूप में काम करता है ताकि वह युवा विधवाओं के जीवन को बचा सके।

### प्रतिज्ञा में सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिम्ब

बीसवीं सदी की शुरुआत में विधवाएँ बहुत ही दयनीय और दयनीय स्थिति में रहती थीं। उन्हें सामाजिक भेदभाव, असमानता, कष्ट, अत्याचार, शोषण आदि का सामना करना पड़ता था। पूर्ण एक महत्वपूर्ण पात्र है जो हिंदू विधवाओं की दुर्दशा का सामना करती है। पति की मृत्यु के बाद उसका जीवन बेकार हो जाता है। वह खुद को अपमानित करती है और सोचती है कि पति के बिना उसका जीवन बेकार है। उसके पास कुछ सस्ते गहने थे। "वह अपने पति की मृत्यु के तेरहवें दिन लाला बट्टी प्रसाद के पास वे सारे गहने लेकर गईं और रोते हुए बोली: "अब मैं इनका क्या करूँगी।" [प्रेमचंद, प्रतिज्ञा: 20]

पूर्णा के असली माता-पिता अब नहीं रहे। उसके एक चाचा हैं, लेकिन उसके चाचा ने शादी के बाद कभी वापस नहीं देखा। इसके अलावा, उसके ससुराल में कोई खून का रिश्ता नहीं है। उसके पास सिर्फ उसका पति था। पति की मौत के बाद उसके पास कोई नहीं है। वह बिल्कुल अकेली है। उसके पास कोई आय नहीं है जिससे वह स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जी सके।

### गोदान: सामाजिक यथार्थवाद का एक अध्ययन

गोदान में मुंशी प्रेमचंद व्यक्तिगत स्तर और सामूहिक रूपों के संबंधों से चिंतित हैं। आम तौर पर, उनके उपन्यासों में कुछ चुनिंदा परिवार एक ही चिंता में लगे हुए हैं और उनके कार्य एक-दूसरे के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। अपने पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं को उजागर करते हैं। वे समकालीन सामाजिक समस्याओं के यथार्थवादी चित्रण के लिए व्यक्ति और परिवार को माध्यम बनाते हैं। इस उपन्यास में, गाँव में संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन की प्रक्रिया की शुरुआत सही ढंग से पाई जाती है। वे पारिवारिक जीवन का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करते हैं।

साहित्य में सामाजिक प्रतिबद्धता होती है और एक लेखक को सामाजिक बुराइयों को उजागर करके उन्हें सुधारना चाहिए। किसी भी सच्चे साहित्य का अंतिम उद्देश्य सत्य कहना होता है। यदि कोई साहित्य इस मूलभूत सिद्धांत की उपेक्षा करने को कहता है, तो वह अपनी चमक खो देता है और पुराना पड़ जाता है। प्रेमचंद जैसे कई लेखकों ने समकालीन भारतीय साहित्य के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। यहाँ मैं प्रेमचंद के अंतिम उपन्यास गोदान को समझने, विश्लेषण करने और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास कर रहा हूँ, जो ग्रामीण भारत की गरीबी और बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दर्शाता है। प्रेमचंद जाति व्यवस्था, दहेज, वेश्यावृत्ति, भ्रष्टाचार, मंदिरों में कुप्रथाओं और धर्म की आड़ में पुजारियों के कामुक कुकर्मों जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ योद्धा के रूप में भी उभरे हैं। प्रेमचंद को बीसवीं सदी में हिंदी उपन्यास का जनक माना जाता है। उनके उपन्यास समाज के हाशिए पर पड़े लोगों के प्रति उनकी सहानुभूति को दर्शाते हैं। वे अपने समय में कुछ व्यक्तियों और समाज के वर्गों के साथ होने वाले अन्याय और उत्पीड़न से लड़ने के लिए मानवतावादी उसाह और सुधारवादी जोश से प्रेरित थे। मानवता के लिए उनके मन में जुनून और करुणा है। प्रेमचंद उर्दू और हिंदी दोनों में पारंगत थे। उन्होंने नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखना शुरू किया। जल्द ही वे हिंदी में लिखने लगे।

उन्होंने विभिन्न समाचार पत्रों और सचित्र पत्रिकाओं में बड़ी संख्या में निबंध, टिप्पणियाँ और समीक्षाएँ लिखीं। उनके नाम तीन सौ लघु कथाएँ, लगभग एक दर्जन उपन्यास और दो नाटक हैं। अपने मित्र दयानारायन निगम की सलाह पर नवाब राय ने ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए निषेध से बचने के लिए प्रेमचंद का उपनाम अपनाया था। वे निम्न वर्ग के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध थे, जिनका अक्सर शोषण किया जाता था। स्पेन के लोगों के लिए सर्वेस, रूसियों के लिए डॉल्स्टॉय और अंग्रेजों के लिए शेक्सपियर का जो महत्व है, वही भारतीय साहित्यिक परंपरा के लिए प्रेमचंद का है। प्रेमचंद पर उनके लेखन में दलित विरोधी होने के कुछ निराशाजनक आरोप लगाए गए हैं। दुर्भाग्य से उन्हें इस विवाद में इसलिए घसीटा गया क्योंकि उन्होंने वंचितों और हाशिए पर पड़े लोगों के शोषण के पीछे काम करने वाले सामाजिक और भाषाई तंत्र का स्पष्ट चित्रण किया है। निस्संदेह प्रेमचंद एक योद्धा के रूप में सामने आते हैं जिन्होंने भारतीय समाज के सामने बहिष्कृत लोगों की कठोर वास्तविकताओं के खिलाफ आवाज़ उठाई।

गोदान में मुख्य पात्र होरी सदियों से अत्याचार सह रहे पीड़ित भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास की कहानी एक गांव से शुरू होती है, जहां किसान होरी और उसका परिवार रहता है। होरी का परंपराओं और स्थापित व्यवस्था में दृढ़ विश्वास है। वह एक किसान है और सामाजिक व्यवस्था की पवित्रता में उसकी अटूट आस्था है। वह हर चीज को अपने भाग्य का हिस्सा मानकर स्वीकार करता है। उसका जीवन दुख, उत्पीड़न और पीड़ा की कहानी रहा है, क्योंकि वह आसानी से भोला बन जाता है। वह समाज और विशेष रूप से ब्राह्मणों के खिलाफ नहीं सोच सकता। वह इतना परंपरा-प्रेमी है कि वह साहूकारों के अन्यायपूर्ण शोषण को सहन करता है। होरी की सादगी और साधुता उसके लिए अभिशाप बन जाती है। वह दोस्तोवस्की के उपन्यास द इडियट के नायक जैसा दिखता है। होरी की पत्नी धनिया उसे गांव के लालची साहूकारों के अन्याय और शोषण के खिलाफ चेतावनी देती है। वह उनकी दृष्टता से पूरी तरह परिचित है, फिर भी वह बिना किसी प्रतिरोध के उन्हें सहता रहता है। होरी ने अपने चेहरे से पसीना पोंछा। वह कहता है, 'मुझे तो चिंता है भाई। खलिहान में पहुँचने से पहले ही अनाज तौलकर ले जाया गया। जमींदार ने अपना हिस्सा लिया और महाजनों ने अपना। मेरे हिस्से में पाँच सेर ही आया। भगवान का शुक्र है कि मैंने रात को चुपके से भूसा निकाल लिया, नहीं तो एक तिनका भी न बचता। जमींदार को छोड़ दो, तीन महाजनों से भी काम चलाना है, उनका ब्याज भी नहीं दे पाया हूँ। जमींदार का आधा लगान अभी बाकी है। महाजन से फिर उधार लेना पड़ा। मैंने हर तरह से कंजूसी की। पर कोई फर्क नहीं पड़ता। अमीर लोग हमें किफ़ायती रहने की सलाह देते हैं। पर कोई मिसाल नहीं पेश करते। राय साहब ने बेटे की शादी में बीस हजार रुपये उड़ा दिए और किसी ने उँगली नहीं उठाई। महाजन मँगरू ने अपने पिता के दाह-संस्कार में पाँच हजार रुपये खर्च कर दिए और किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा। गरीब के भी बेटे और बाप होते हैं' (लात, 20)। उसकी निर्यात बस यही है कि वह इस शोषण के जाल में फँसकर मर जाए।

### मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास निर्मला

निर्मला एक समृद्ध वकील उदयभान सिंह की पंद्रह वर्षीय बेटी थी। जब सिन्हा साहब, जो कि धनी व्यक्ति थे, निर्मला की सगाई अपने बेटे भुवन मोहन से करने के लिए राजी हो गए, तो उनकी माँ कल्याणी ने राहत की सांस ली। दहेज की मांग की गई, लेकिन

बेटी की खुशी के लिए कल्याणी ने सहमति दे दी। लेकिन जब शादी की तैयारियाँ शुरू हुईं, तो खर्च बढ़ गए। कल्याणी ने मितव्ययिता की वकालत की। उनके पति हमेशा पैसे के मामले में सावधान नहीं रहते थे। अप्रिय दृश्य भी हुए। और अपनी पत्नी से खास तौर पर तीखी नोकझोंक के बाद उदयभान सिंह गुस्से में घर छोड़कर चले गए। वे कभी वापस नहीं लौटे। निर्मला की माँ अब भुवन मोहन को अपेक्षित दहेज देने की स्थिति में नहीं थीं। शादी टूट गई। निर्मला के सपने चकनाचूर हो गए। भुवन मोहन, जो सुंदर, युवा और बुद्धिमान थे, ने अभी-अभी मेडिकल की डिग्री ली थी। निर्मला अपने भावी पति के घर में कल्पना की दुनिया, खुशी और आराम की दुनिया में जी रही थीं। अब उसने सुधा नाम की लड़की से शादी कर ली थी, जिसके माता-पिता ने पाँच हज़ार रुपये दहेज दिया था।

कल्याणी ने अपनी बेटी के लिए एक उपयुक्त वर ढूँढने के लिए कई और प्रयास किए। जब ये प्रयास विफल हो गए, तो उसने एक अधेड़ वकील द्वारा भेजे गए प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, हालाँकि वह विधुर था, और उसकी बेटी से पच्चीस साल बड़ा था। कल्याणी को टोटल राम का प्रस्ताव निर्मला को आजीवन कुंवारी रहने से बचाने की एकमात्र उम्मीद दिखाई दी। उसने स्वीकार कर लिया। इस विवाह में दहेज की कोई समस्या नहीं थी। बहुत जल्द ही निर्मला तोता राम के घर में बस गई। उसकी बहन रुक्मिणी और उसके तीन बेटे - 'मनसा राम', 'जिया राम' और 'सिया राम' - एक ही घर में रहते थे। उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि युवा दुल्हन के आने से उनकी स्वतंत्रता गंभीर रूप से सीमित हो जाएगी। मनसा राम ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो निर्मला से दयालु था। वह लगभग उसी की उम्र का था, और उसका स्वभाव अच्छा, संवेदनशील था। उसकी भाभी निर्मला के साथ खुले तौर पर दुश्मनी का व्यवहार करती थी और हर अवसर पर उसका मजाक उड़ाती थी। तोता राम के छोटे बेटे अपने स्वार्थ में डूबे रहते थे। इसलिए निर्मला को मनसा राम से बहुत लगाव हो गया था। इसके अलावा, उसने उसे अंग्रेजी पढ़ाने की पेशकश भी की थी, जिसे उसने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया था।

तोता राम को विकास पसंद नहीं था। उसने अपने बेटे को बोर्डिंग हाउस में भेज दिया। साथ ही उसने निर्मला के लिए उपहार लाने शुरू कर दिए, घर की जिम्मेदारी रुक्मिणी के हाथों से लेकर उसके हाथों में सौंप दी और उसे तरह-तरह से खुश करने की कोशिश की। एक झूठे संत के लिए।

- भुवनमोहन सिन्हा, निर्मला के पूर्व मंगेतर। निर्मला के पिता की मृत्यु के बाद, उन्हें पता चलता है कि दहेज नहीं मिलेगा और वे शादी से पीछे हट जाते हैं।
- सुधा भुवनमोहन की पत्नी और निर्मला की सहेली है। उसके ज़रिए ही भुवन को निर्मला के बारे में पता चलता है; कि यह वही लड़की है जिसे उसने पहले छोड़ दिया था। उसकी आलोचना उसे आत्महत्या करने पर मजबूर कर देती है।
- उदयभानु लाल निर्मला के पिता हैं।
- कल्याणी, निर्मला की माँ, जिसे परिस्थितियों के कारण निर्मला का विवाह तोताराम से करना पड़ा।
- भालचंद्र सिन्हा भुवनमोहन सिन्हा के पिता हैं।
- पंडित मोटाराम, एक बुद्धिमान व्यक्ति, एक पुजारी के रूप में।
- रुक्मिणी, तोताराम की विधवा बहन।
- भूगी, तोताराम के घर की नौकरानी।
- आशा, तोताराम की दूसरी पत्नी निर्मला से बेटी।

### मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास निर्मला में चित्रित समाजवाद

प्रेमचंद के उपन्यासों में निर्मला सबसे महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद व्यक्तिगत रूप से इसके बारे में बहुत अच्छी राय नहीं रखते थे और उन्होंने कहा कि यह एक विशेष सामाजिक बुराई को उजागर करने के उद्देश्य से लिखा गया था, जिसका नाम है "असमान विवाह" यानी बूढ़े पुरुषों और उनकी बेटियों के बराबर उम्र की लड़कियों के बीच विवाह। लेकिन उपन्यासकार की कला के दृष्टिकोण से, यह एक सक्षम रचना है। इसमें एक एकीकृत संरचना है जो शायद ही उनके लंबे उपन्यासों में या यहाँ तक कि उनकी लंबी छोटी कहानियों में भी देखने को मिले। वास्तव में, दो सामाजिक बुराईयाँ उपन्यासकार की आलोचना का लक्ष्य हैं। असमान विवाह इसलिए होते हैं क्योंकि माता-पिता को अपनी बेटियों के लिए उपयुक्त वर ढूँढना असंभव लगता है जब तक कि वे बड़ी मात्रा में दहेज न जुटा सकें। इस प्रकार दहेज मूल बुराई है। आज भी, जबकि भारत इक्कीसवीं सदी के दसवें दशक में कदम रखने की तैयारी कर रहा है, यह दुखद स्थिति व्यावहारिक रूप से अपरिवर्तित बनी हुई है। इतने हज़ारों रुपये नकद मांगने के बजाय, लड़के के माता-पिता ने यह बता दिया कि एक टेलीविज़न सेट, इम्पोर्टेड कार, एक इम्पोर्टेड घड़ी, दो या तीन महंगे सूट, एक अच्छी तरह से सुसज्जित घर और बैंक बैलेंस की सराहना की जाएगी। यह व्यवस्था और भी ज्यादा क्रूर है क्योंकि, ज्यादातर मामलों में, युवक खुद अपने माता-पिता से भी ज्यादा मांग करता है। निर्मला में ये दोनों परस्पर जुड़ी बुराईयाँ मिलकर एक शुद्ध अशांत त्रासदी पैदा करती हैं, जिसमें कहीं भी, किसी के लिए भी आशा की कोई किरण नहीं है।

निर्मला उपन्यास की केंद्रीय पात्र का नाम है। उपन्यास में उसके जीवन की दुखद कहानी का वर्णन किया गया है। निर्मला उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने कई विवाहों से जुड़ी समस्याओं को दर्शाने की कोशिश की है और बताया है कि कैसे एक सौतेली माँ को सभी गलत कामों के लिए दोषी ठहराया जाता है और इस तरह अंततः एक स्वस्थ समृद्ध परिवार नष्ट हो जाता है। लेकिन निर्मला अपने सपनों के आदमी को उसमें नहीं पा सकी क्योंकि वह उससे बहुत बूढ़ा था। फिर भी, उसने उसके सामने खुशी का दिखावा किया। प्रेमचंद के लिए तालियाँ, जिन्होंने एक पुरुष होने के बावजूद भी उस भावना को लिखा जो एक महिला निर्मला जैसी स्थिति में महसूस कर सकती है और करेगी।

### निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर, प्रतिज्ञा में प्रेमचंद द्वारा इन पात्रों का चित्रण मानव व्यवहार की जटिलताओं और सामाजिक सुधार की आवश्यकता को दर्शाता है तथा जाति, लिंग और सामाजिक स्थिति पर आधारित सामाजिक बाधाओं को दूर करने में सहानुभूति, समानता और नैतिक अखंडता के महत्व पर प्रकाश डालता है जो व्यक्तियों को विभाजित करते हैं।

### संदर्भ

1. जयलक्ष्मी के. समाज सुधारक प्रेमचंद - एक समीक्षा। 2016;20:44-46.
2. पंत डॉ. सामाजिक वास्तविकताओं का पर्दाफाश: प्रेमचंद की निर्मला अपने समय का दर्पण. 2020;10:41-44.
3. सिल्पा चौधुरीमयुम. मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास प्रतिज्ञा में सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिंब। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स। 2024, 5. 10.29121/शोधकोश. v5.i1.2024.4261.

4. परवीन क्रमर, शिवम मैका. प्रेमचंद: साझा संस्कृति के एक विपुल लेखक. एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल. 2021;8:146-149.
5. शैलेंद्र सिंह. औपनिवेशिक उत्तर भारत में नारीत्व के प्रेमचंद के बदलते चित्रण: अनुरूपता और प्रतिरोध के बीच, भारतीय समाजशास्त्र में योगदान [सेज प्रकाशन]. 2020;54(3): 414-39. 10.1177/0069966720947540.
6. शबीना फातिमा. प्रेम चंद की रचनाओं में हाशिए पर पड़े समाज का चित्रण, 2018.
7. निखिल गोविंद. सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक प्रभाव: मुंशी प्रेमचंद की दुनिया, 2019. 10.1002/9781118635193.ctwl0239.
8. सुश्री सागरे, मठपति डॉ. गोदान: सामाजिक यथार्थवाद का एक अध्ययन। क्रिएटिव लॉन्चर. 2020;5:23-29. 10.53032/tcl.2020.5.2.02.
9. शैलेंद्र सिंह. प्रेमचंद, औपनिवेशिक उत्तर भारत में राष्ट्रवाद और नागरिक प्रतिरोध, भारतीय आर्थिक और सामाजिक इतिहास समीक्षा [सेज प्रकाशन]. 2019;56(2):171-94. 10.1177/0019464619835663.
10. बोस, अनिरबन. प्रेमचंद के कफन में हाशिये के जीवन के माध्यम से दलित चेतना के चित्रण में सरलता की खोज. इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2023. 10.36948/ijfmr. 2023.v05i04.4397.
11. सारा हंट. हिंदी दलित साहित्य और प्रतिनिधित्व की राजनीति, 2014. 10.4324/9781315733944.
12. शैलेंद्र सिंह. औपनिवेशिक उत्तर भारत में नारीत्व के प्रेमचंद के बदलते चित्रण: अनुरूपता और प्रतिरोध के बीच, भारतीय समाजशास्त्र में योगदान [सेज प्रकाशन]. 2020;54(3):414-439. 10.1177/0069966720947540.
13. परवीन क्रमर, उदय कर्दला. प्रेमचंद: साझा संस्कृति के एक विपुल लेखक. एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल. 2021;8:146-149.
14. संजय कुमार. भारत में सामाजिक परिवर्तन में दलित साहित्य की भूमिका, 2024. 10.36948/ijfmr. 2024.v06i03.22076.
15. हारिस कादिर. प्रेमचंद, नाटककार और नाटक आलोचक: औपनिवेशिक भारत में हिंदी रंगमंच का मूल्यांकन. साहित्य, आलोचना और साम्राज्य आज. 2024, 60. 10.1177/30333962241267795.

### Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.